चेले बनानाः वचन को बाँटना
प्रेरितों के काम

यदि आपके पास इस परमेश्वर का वचन है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ मत्ती 4 निकालें। हम कुछ ही देर में प्रेरितों के काम पर आएँगे, परन्तु मैं चाहता हूँ कि हम मत्ती 4 से आरम्भ करें, और जब आप उसे निकाल रहे हैं, तो मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मैं परमेश्वर के प्रति कितना कृतज्ञ हूँ, मैं आपके लिए परमेश्वर के प्रति कितना कृतज्ञ हूँ। मेरा दिल पूरी तरह से उत्तरी भारत में था। उत्तरी भारत में सुसमाचार के प्रसार में आपके विश्वास के प्रभाव को देखकर मेरा मन उमड़ रहा है और मसीह में मुझे गर्व है।

पिछले चार या पाँच वर्षों में हमने हमारे यहाँ कई बदलाव किए हैं, और आपने भी विभिन्न प्रकार के त्याग किए हैं, और इसलिए, मेरी कामना है कि आप में से प्रत्येक व्यक्ति उन लोगों के चेहरों को देख पाता जिन्होंने एक साल पहले यीशु के बारे में नहीं सुना था; उन्होंने यीशु के बारे में सुना भी नहीं था, और अब उन्होंने उद्धार के लिए यीशु पर विश्वास किया है। काश, आप उन गाँवों और शहरी झुग्गियों में घूम सकते, जहाँ एक साल पहले तक कोई कलीसिया नहीं थी, और अब उन गाँवों और झुग्गियों में अलग–अलग घरों में कई कलीसियाएँ चलती हैं।काश आप उस पासबान को बातें करते देख पाते, जिसकी आँखें आँसुओं से भरी हैं और वह बता रहा है कि जिस गाँव में वह पिछले 20 वर्षों से पासबानी कर रहे हैं वहाँ पहली बार स्वच्छ जल उपलब्ध करवाया गया है। मेरी कामना है कि आप उस जगह पर माताओं के हाथों में स्वस्थ बच्चों को देख पाते जहाँ बच्चे मर रहे थे। जिन क्षेत्रों में बच्चे मर रहे थे वहाँ एक हजार से अधिक महिलाएँ और बच्चे जी रहे हैं और फल–फूल रहे हैं। सौ अलग–अलग गाँवों में पहली बार साफ पानी पहुँचा है। अब 30,000 से अधिक लोगों के पास स्वच्छ जल है और उनके बच्चे दस्त जैसे रोगों से नहीं मर रहे हैं।

मेरी इच्छा है कि आप उन बीस लाख लोगों को देख पाते जिन्हें पहली बार नया नियम श्रव्य रूप में मिला है; और सत्तर लाख लोग जिनकी भाषा में पहली बार बाइबल की कहानियों का प्रकाशन हुआ है; भारत के सैंकड़ों गाँवों में पहली बार सुसमाचार पहुँचा है और हमारे हजारों भारतीय भाइयों और बहनों को चेले बनाने और कलीसियाओं की स्थापना करने का प्रशिक्षण दिया गया है। आपको दिए गए अनुग्रह के लिए परमेश्वर की स्तुति हो। आपकी उदारता और आपके धीरज और आपकी स्थिरता के लिए धन्यवाद।

पासबान के रूप में, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हम पिछले तीन महीनों से प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन क्यों कर रहे हैं। यह केवल एक संयोग नहीं है। मैं ने पिछले वर्ष के अन्त में यह नहीं सोचा था, "ओह, हम क्या करें? चलो देखते हैं। चलो हम प्रेरितों के काम को देखेंगे।" प्रेरितों के काम का अध्ययन करने का एक कारण है, और जिस प्रकार हम इसका अध्ययन कर रहे हैं उसका भी एक कारण है।

कारण यह हैः परमेश्वर तेजोमय है, और वह पृथ्वी की प्रत्येक जाति की स्तुति के योग्य है। हर जगह के सारे लोग पापी हैं; संयुक्त राज्य अमरीका के लोग, भारत और हर जगह के सारे लोग पापी हैं। अलग–अलग जगहों पर यह अलग–अलग दिखाई देता है। भारत में सोने, चाँन्दी और पत्थर के देवता हैं। अमरीका में देवता धन, सुख और घमण्ड हैं, लेकिन झूठे देवता हर जगह हैं जिन्हें हमने अपना प्रेम और

अपनी भक्ति और अपने आप को दे दिया है, और पाप की मजदूरी अनन्त मृत्यु है। अनन्त रूप से पवित्र परमेश्वर के सामने पाप की मजदूरी नरक में अनन्तकाल का दण्ड है।

परन्तु, परमेश्वर ने अपनी करूणा में उद्धार का एक मार्ग निकाला है। उसने हमारे पाप का मूल्य चुकाने और हमारे स्थान में खड़े होने के लिए अपने पुत्र को भेजा है ताकि जहाँ भी, जो कोई मसीह पर विश्वास करता है, उसका हमेशा के लिए परमेश्वर से मेल हो जाए और वह नरक की यातनाओं से छूटकर परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य के आधार पर स्वर्ग की आशा को पाए। यह अच्छा समाचार है। इसीलिए यह सुसमाचार कहलाता है, क्योंकि यह हर जगह, हर व्यक्ति के लिए एक खुशखबरी है।

बात यह है, हम जो इस सुसमाचार को जानते हैं, हमारे सामने इस महान परमेश्वर का आनन्द लेने के अरबों–खरबों वर्ष हैं। उसके उद्धार के कारण, हम जानते हैं कि अरबों–खरबों वर्षों में हम केवल इस आनन्द को आरम्भ करेंगे और सदा तक इस महान परमेश्वर के साथ आनन्दित रहेंगे। अतः, यहाँ हम केवल थोड़े ही समय के लिए हैं, केवल 70 या 80 वर्षों के लिए। अरबों–खरबों वर्षों की तुलना में यह इतना अधिक नहीं है, हम केवल थोड़े ही समय के लिए यहाँ पर हैं। जब हम थोड़े समय के लिए यहाँ पर हैं, तो हमें परमेश्वर से एक आदेश मिला है, और वह आदेश हर जगह, हर व्यक्ति को इस उद्धार के बारे में बताना है। इसीलिए हम अभी तक यहाँ पर हैं।

वह हमें अपने साथ रहने के लिए क्यों नहीं ले गया है? हम अब भी कष्ट और सुनामी और भूकम्पों के देश और संसार में क्यों रह रहे हैं? हम अभी तक यहाँ हैं क्योंकि उसने हमें एक काम सौंपा है, उसके सुसमाचार को सारे संसार में फैलाना, और इसका मतलब है कि यह कार्य हम सबके लिए है, न कि केवल कुछ लोगों के लिए। यदि यह सुसमाचार पूरे संसार में फैलाना है तो हम सबको यह करना होगा। मसीह के अनुयायी होने का यही अर्थ है।

मैं आपको यह दिखाना चाहता हूँ, मत्ती 4:18. यीशु द्वारा लोगों को अपने पीछे होने के लिए बुलाने के आरम्भ से ही, मैं चाहता हूँ कि आप इस आदेश, इस कार्य पर बल को देखें। मत्ती 4:18 देखें। यह मत्ती के सुसमाचार का आरम्भिक भाग है, अपने चेलों, अपने अनुयायियों के लिए यीशु की आरम्भिक बुलाहट है। मत्ती 4:18 कहता है, *"उसने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों अर्थात् शमौन को जो पतरस कहलाता है, और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुवे थे। और उनसे कहा..."* यह उसकी पहली बुलाहट थी, आगे देखें। पद 19, यदि आपकी बाइबल में यह रेखांकित नहीं है तो आप उसे रेखांकित कर सकते हैं। यीशु ने उनसे कहा, *"मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम को मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊँगा।"* इसे समझें। जब आप उसके पीछे चलते हैं, तो आप मनुष्यों के पकड़ने वाले बनते हैं। आसान सी बात है।

जब आप मसीह के पीछे चलते हैं तो आप मसीह के लिए एक मछुवारे बनते हैं। अब, यह स्पष्टतः इन मछुवारों के लिए एक शाब्दिक तस्वीर है। यीशु उनसे कहते हैं, "मेरे पीछे आने के बाद तुम्हारा एक नया पेशा होगा। जाल में मछलियों को पकड़ने की कोशिश करने की बजाय, तुम लोगों को एक राज्य में खींचोगे। तुम पुरूषों और स्त्रियों को एक राज्य की ओर खींचोगे, और जो कोई मेरे पीछे आता है, उसे मैं मनुष्यों को पकड़ने वाला बनाऊँगा। तुम अपने जीवन को पुरूषों और स्त्रियों को एक राज्य में लाने पर केन्द्रित करोगे। यह तुम्हारे जीवन की प्राथमिकता होगी; और तुम यही करने के लिए जीयोगे।"

वह उसकी आरम्भिक बुलाहट थी। अब, मत्ती के अन्त में, मत्ती 28 पर आएँ, और पद 19 को देखें। मैं चाहता हूँ आप उसे देखें। "आरम्भ में यीशु कहते हैं, "मेरे पीछे हो लो, मनुष्यों को पकड़ो। प्रत्येक अनुयायी एक मछुवारा है।" जब आप मत्ती 28:19 पर आते हैं, ये अपने चेलों से कहे गए उसके अन्तिम शब्द हैं। मत्ती 28:19, यीशु उन्हीं चेलों को एकत्रित करते हैं जिन्होंने उसकी आरम्भिक बुलाहट का जवाब दिया था, और

कहते हैं, *"इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।"*

वही बातः "जाओ, मनुष्यों को पकड़ो। जाओ, सारी जातियों के पुरूषों और स्त्रियों को चेले बनाओ; पुरूषों और स्त्रियों को राज्य में लाओ, उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। उन्हें मेरी आज्ञा मानना सिखाओ। यही तुम्हारा कार्य है।" वह अपने प्रत्येक अनुयायी से कहते हैं, "जाओ, और चेले बनाओ।" अतः, शुरूआत से अन्त तक हम देखते हैं कि अपने चेलों के लिए यीशु का ध्यान मनुष्यों को पकड़ने और उन्हें चेले बनाने पर था।

एक प्रमुख बोध...

प्रत्येक चेला एक चेला बनाने वाला है।
विश्वास के परिवार के रूप में हमें प्रेरित करने वाला बोध यही है; यही हमारे लिए प्रमुख बोध है किः मसीह का प्रत्येक अनुयायी पुरूषों और स्त्रियों का मछुवारा है। प्रत्येक चेला एक चेला बनाने वाला है। हमारा विश्वास है कि कलीसिया में, बिना किसी अपवाद के, मसीह के प्रत्येक अनुयायी का मूलभूत उद्देश्य चेले बनाना है। हमें मसीह ने चेले बनाने के लिए बुलाया है; हम में से कुछ को नहीं, सब को। प्रत्येक अनुयायी एक मछुवारा है, और प्रत्येक चेला एक चेला बनाने वाला है।

महान आज्ञा हम में से कुछ लोगों के लिए एक बुलाहट नहीं, परन्तु हम सबके लिए एक आदेश है।
हमारा विश्वास है कि महान आज्ञा, जो मत्ती 28:18–20 में दी गई है, महान आज्ञा हम में से कुछ लोगों के लिए एक बुलाहट नहीं, परन्तु हम सबके लिए एक आदेश है। इस संसार में किसी भी मसीही को सारी जातियों को चेला बनाने के लिए बुलाया नहीं गया है; प्रत्येक मसीही को सारी जातियों को चेला बनाने का आदेश दिया गया है। महान आज्ञा हमारे लिए एक विकल्प नहीं है जिस पर हम विचार करें या जिसकी दूसरे विकल्पों से तुलना कर सकें। महान आज्ञा हमारे लिए एक आदेश है, जो कलीसिया में हमारी रीति को पूरी तरह से बदल देता है। यह कलीसिया के रूप में हमारे कार्य करने के तरीके को बदल देता है। यह इस समय जो हो रहा है उसके बारे में हमारी समझ को भी पूरी तरह बदल देता है।

हम दर्शकों का समूह नहीं हैं; हम चेले बनाने वालों की संगति हैं।
हम दर्शकों का समूह नहीं हैं, हम चेले बनाने वालों की संगति हैं। हम कभी भी यह सोचते हुए कलीसिया में नहीं आते हैं, "मेरी आशा है कि उन्होंने हमारे लिए एक अच्छी सभा की योजना बनाई होगी।" हम कभी भी प्रचार के बारे में अपना निर्णय नहीं सुनाते हैं। लक्ष्य यह नहीं है कि आप यह कहते हुए वापस जाएँ, "हाँ, प्रचार ठीक–ठाक था। उसने चेले बनाने के बारे में पहले भी बताया है; यह भी बिल्कुल वही बात थी।" नहीं, आप यह कहते हुए वापस नहीं जाते हैं, "संगीत अच्छा था। अधिकाँश गीत मुझे अच्छे लगे, लेकिन एक गीत मुझे अच्छा नहीं लगा।" हम ऐसा नहीं करते हैं।

अब, उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हम सोच सकते हैं कि हमारा कार्य यही है, और हमारी संस्कृति में प्रत्येक कलीसिया में यही बात घर कर जाती है। हमारी मण्डली से वापस जाते समय हम भी यही करने की परीक्षा में पड़ते हैं। आप यह कहना चाहेंगे, "मुझे यह कैसे अच्छा लगा? मुझे वह कैसे लगा? वह मेरे लायक कैसे था?" यही मुख्य बात है।

चेले बनाने के बारे में बहुत कुछ लिखने वाले एक पासबान, बिल हल ने कहा कि अमरीकी कलीसियाएँ "कुर्सियों को भरने वाले, प्रचार का स्वाद चखने वाले, आत्मिक उन्मादियों से भरी हैं, जिनके विश्वास और

व्यवहार में कोई सामंजस्य नहीं है।" पिछले कुछ वर्षों से हम इसी बात से जूझते आ रहे हैं। एक पासबान के रूप में मैं पिछले कुछ वर्षों से इसी बात से जूझता आ रहा हूँ। विश्वास के परिवार के रूप में पिछले कुछ वर्षों से हम इसी बात से जूझते आ रहे हैं। क्या हम वास्तव में उस पर विश्वास करते हैं जो हम हर सप्ताह पढ़ते हैं? क्या हम वास्तव में उस पर विश्वास करते हैं जो हम कह रहे हैं? क्या हम वास्तव में उस पर विश्वास करते हैं जो हम गाते हैं? यदि यह परमेश्वर वही है जैसा वह अपने आप को कहता है, यदि यह उद्धार इतना महान है जितना हम इसके बारे में कहते हैं, और ऐसे अरबों लोग हैं जिन्होंने इसे सुना नहीं है या इसे स्वीकार नहीं किया है और वे अनन्त नरक की ओर जा रहे हैं, तो इस संसार में हमारा व्यवहार बिल्कुल अलग दिखाई देगा।

यदि यह पुस्तक सत्य है तो हमारे पास अपने जीवनों के साथ खेल खेलने का समय नहीं है। हमारे पास मनोरंजन का, हमसे जुड़ी हुई बातों को संगठित करने का, अपने आप को आरामदायक बनाने का समय नहीं है। यदि हम बाइबल पर विश्वास करते हैं, तो इन सबका कोई मतलब नहीं है। ये बेमेल हैं। यदि यह सत्य है तो हम यहाँ दर्शक नहीं हैं, हम चेले बनाने वाले हैं। यह कार्य हम सबको करना है। यह केवल कुछ लोगों के लिए नहीं है, यह हम सबके लिए है।

रॉबर्ट कोलमैन ने चेले बनाने के विषय पर एक उत्कृष्ट रचना की, *द मास्टर प्लान ऑफ इवैंजलिस्म,* जो संभवतः बाइबल के बाद मेरे जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली पुस्तक है। मैं उस पुस्तक की अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ, उन्होंने लगभग तीस वर्ष पूर्व इसे लिखा था, परन्तु यह एक अतुल्य पुस्तक है। *द मास्टर प्लान ऑफ इवैंजलिस्म* में कोलमैन ने लिखा,

> पुरूषों और स्त्रियों को चेले बनाना वह प्राथमिकता है जिस पर हमारे जीवन केन्द्रित होने चाहिए। महान आज्ञा कोई विशेष बुलाहट या आत्मा का वरदान नहीं है; यह एक आदेश है – विश्वास के सम्पूर्ण समुदाय को सौंपा गया एक उत्तरदायित्व है। इसके कोई अपवाद नहीं हैं। बैंक अध्यक्ष और वाहन मैकेनिक, चिकित्सक और शिक्षक, धर्मविज्ञानी और घरेलू महिला– मसीह पर विश्वास करने वाले हर एक व्यक्ति का इस कार्य में एक हिस्सा है। (यूहन्ना 14:12) महान आज्ञा एक ऐसी जीवनशैली है जिसमें परमेश्वर की प्रत्येक सन्तान के सारे संसाधन शामिल हैं। यहाँ मसीह की सेवकाई चेले बनाने की दैनिक गतिविधि में जीवन्त होती है। चाहे हम नौकरी करने वाले हों या कलीसिया में हमारा कोई पद हो, जातियों को अनन्त राज्य में लाने के लिए मसीह जैसी प्रतिबद्धता उसका एक भाग होनी चाहिए। यदि सारी जातियों को चेले बनाना हमारे जीवन की धड़कन नहीं है तो कुछ गड़बड़ है, या तो मसीह की कलीसिया के बारे में उनकी समझ में कुछ गड़बड़ है या परमेश्वर के मार्ग पर चलने की हमारी इच्छा में कुछ गड़बड़ है।

चेले बनाना हम में से प्रत्येक के जीवन की धड़कन होना चाहिए। मुख्य बोध को पूरे संसार में फैलाना चाहिए कि मसीह का प्रत्येक चेला एक चेला बनाने वाला है। अब, यह बोध एक सवाल उठाता हैः यदि चेले बनाना हमारे जीवनों की धड़कन और वह प्राथमिकता है जिस पर हमारे जीवन केन्द्रित होने चाहिए, तो आप इसे कैसे करते हैं? आप चेले कैसे बनाते हैं? क्योंकि यदि हमारा जीवन इस प्राथमिकता के चारों ओर घूमता है, तो हमें यह जानने की जरूरत है कि इसे कैसे करना है, और चार साल पहले मैं इसी बिन्दू पर पहुँचा था, जहाँ मुझे महसूस हुआ कि "हम हर समय चेले बनाने के बारे में बोलते हैं," लेकिन यदि आप रविवार को किसी भी कलीसिया में बैठे हुए लोगों का सर्वेक्षण करें या उनकी राय पूछें, और उनसे आपको यह सवाल पूछना हो, "आप सारी जातियों को चेला कैसे बनाते हैं? आप इसे कैसे करते हैं? यह व्यवहारिक रूप में कैसा दिखाई देता है?" मुझे लगता है कि आपको अलग–अलग प्रकार के उत्तर मिलेंगे। हो सकता

है आपको संदिग्ध नजरों से देखा जाए या फिर सूनी नजरें आपको घूरती हुई दिखाई दें। यदि हम पूछते हैं कि "आप चेले कैसे बनाते हैं?" तो उत्तर शायद पूरे मानचित्र पर फैले होंगे, और यह अच्छा नहीं है।

यदि मसीह के अनुयायियों के रूप में हम किसी कार्य में निपुण बनना चाहते हैं, तो हमें इस कार्य में निपुण बनना चाहिए। हमें जानने की जरूरत है कि इसे कैसे किया जाता है। इसलिए, चार वर्ष पूर्व, हमने छह सप्ताहों को अलग किया, और हमने *मेरे पीछे हो लो,* नामक एक श्रंखला की, जिसके दौरान हमने मत्ती 4 और मत्ती 28 और यूहन्ना 17 में समय व्यतीत किया और हमने देखा कि यीशु ने अपने चेलों के साथ क्या किया जिससे हमें चेले बनाने की इस आज्ञा में सहायता मिल सके, और हमने देखा, "चेले बनाना कैसा दिखाई देता है?" वह आधारभूत था।

और पिछले सप्ताह के अन्त में मैं प्रार्थना में सघन समय को व्यतीत कर रहा था, प्रार्थना कर रहा था कि इस वर्ष वचन के अध्ययन के बारे में हमारे लिए प्रभु की क्या इच्छा है, बहुत सारी बातें थीं, जिन्हें, यदि प्रभु की इच्छा हो तो हम इस वर्ष के दौरान देखेंगे, परन्तु यह बात सबसे प्रमुख थी। जैसा मैं ने बताया, पिछले चार या पाँच वर्षों में हमने बहुत से बदलाव किए हैं। यथार्थ यह है कि यही वह प्राथमिकता है जिसके चारों ओर हमारा जीवन घूमता है, यह हमारे जीवनों की धड़कन है, हमें निरन्तर इस बात की ओर लौटने की जरूरत है कि चेले बनाने का क्या मतलब है।

अतः, मुझे महसूस हुआ कि हमें इसमें डुबकी लगाने की आवश्यकता है, हम चेले बनाने के बारे में बहुत बातें करते हैं, और मैं इसे सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि हम जानते हैं कि इससे पवित्रशास्त्र का क्या मतलब है? अब, पीछे लौटकर 2007 में किए गए उसी अध्ययन को दोबार करने की बजाय, मैं ने निर्णय लिया कि हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में डुबकी लगाएँगे। यीशु कहते हैं, "जाओ और संसार की सारी जातियों को चेले बनाओ," और उसके बाद प्रेरितों के काम की पुस्तक में जो होता है वह उस प्रश्न का उत्तर है। प्रेरितों के काम की पुस्तक एक तस्वीर है कि आरम्भिक कलीसिया में चेले बनाने का कार्य कैसे किया गया। पिछले तीन महीनों में हमने जो पढ़ा और अध्ययन किया है, वह चेले बनाने के कार्य की एक तस्वीर है। यह सुसमाचार की एक तस्वीर है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में पहली कलीसिया की शुरूआत 120 लोगों के एक समूह के साथ हुई। यह हमारी कलीसिया के आकार का तीन प्रतिशत है। 120 लोगों का समूह एक छोटा सा समूह है, और प्रेरितों के काम 28 के अन्त तक, सुसमाचार का प्रसार होता है, और कुछ लोगों का अनुमान है कि कलीसिया का आकार उसकी शुरूआत के समय से 400 गुना अधिक हो जाता है। यह अच्छा है। यदि आप 400 गुना वृद्धि को अनुभव करते हैं, तो यह एक अच्छा दिन रहा है। कलीसिया बढ़ रही है, और सुसमाचार पृथ्वी की छोर तक जा रहा है। यह कैसे हुआ? सुसमाचार इस तरह आगे कैसे बढ़ता है? हम चाहते हैं कि सुसमाचार का एक हिस्सा इस तरह आगे बढ़े। हम चाहते हैं कि राज्य में 400 गुना वृद्धि हो। यह अच्छा होगा। वह एक अच्छा शुरूआती स्थान होगा। हम उसे देखना चाहते हैं, लेकिन यह होता कैसे है?

कुछ लोग कहेंगे, "यह पतरस और पौलुस जैसे अगुवों के कारण है," और इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक पतरस और पौलुस जैसे मुख्य अगुवों पर ध्यान देती है, परन्तु मैं चाहता हूँ आप इस बात को देखें कि सुसमाचार का यह प्रसार और कलीसिया की संख्या में वृद्धि और उन्नति अन्तिम रूप से दो अगुवों के कारण नहीं थी, परन्तु एक पूरे समूह के कारण थी जिनमें से प्रत्येक को यह अहसास था कि वे चेले बनाने वाले हैं। यह केवल कुछ लोगों के कारण नहीं, परमेश्वर के सारे लोगों के कारण थी। इसी कारण कलीसिया की उन्नति हुई।

मैं आपको इसे दिखाता हूँ। मेरे साथ प्रेरितों के काम 4 पर चलें। मैं आपको जल्दी से एक सैर पर ले जाना चाहता हूँ और आपको दिखाना चाहता हूँ कि पिछले तीन महीनों से हम जिस पुस्तक का अध्ययन कर रहे

हैं वह केवल कुछ लोगों द्वारा चेले बनाने के बारे में नहीं है, परन्तु सब लोगों द्वारा चेले बनाने के बारे में है। मैं चाहता हूँ आप प्रेरितों के काम 4:13 से देखना शुरू करें। मैं आपको यह पद दिखाना चाहता हूँ। अब, यह वास्तव में दो प्रेरितों, पतरस और यूहन्ना के बारे में है, परन्तु मैं आपको दिखाना चाहता हूँ कि जिस पुस्तक का हम अध्ययन कर रहे हैं वह "महा–मसीहियों" द्वारा सुसमाचार को पृथ्वी की छोर तक ले जाने के बारे में नहीं है।

याद करें कि पतरस और यूहन्ना सुसमाचार सुनाते रहे हैं, और भीड़ ने उन्हें देखा। प्रेरितों के काम 4:13 कहता है, *"जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।"* यह अक्षरशः अनुवाद है। "अनपढ़ और साधारण मनुष्यों" का अर्थ है कि उन्हें महसूस हुआ कि वे "अशिक्षित और अज्ञानी थे।" यह बहुत बड़ी बात है। मुझे यह पसन्द है कि लूका ने पतरस और यूहन्ना के बारे में यह लिखा। वे ऐसे ही थे। "तुम्हें अशिक्षित और अज्ञानी माना गया था।"

इसलिए, उत्साहित हों; हम कम से कम इतने तो हैं। मुझे लगता है कि हम कम से कम वहाँ तक तो आ गए हैं। मैं आपको प्रोत्साहित कर सकता हूँ और कह सकता हूँ कि आप कम से कम एक अशिक्षित अज्ञानी हैं। अतः, शुरूआत में हम इन लोगों से पीछे नहीं हैं। और कुछ न हो तो भी, हम इन लोगों से आगे हैं क्योंकि हमने अभी इसे पढ़ा है। इसलिए, खेल में हम आगे हैं। और उन्होंने महानायकों को हमारे संघ से निकाल दिया है। नहीं, हम उनसे आगे हैं, हम उनके संघ से बाहर हैं।

फिर, आप कहते हैं, "फिर भी केवल पतरस और यूहन्ना ही हैं।" मेरे साथ प्रेरितों के काम 8 में चलें। इनमें से कुछ समीक्षा है, परन्तु यह अच्छी और प्रमुख समीक्षा है। प्रेरितों के काम 8:1 को देखें। याद रखें, यह स्तिफनुस को पत्थरवाह करने के ठीक बाद है, और शाऊल उसके वध में सहमत था। प्रेरितों के काम 8:1 कहता है, *"उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर–बितर हो गए।"* फिर, लिखा है, *"भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा.. .शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था।"* पद 4 कहता है, *"जो तितर–बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।"*

क्या आपने इसे समझा? क्या यहूदिया और सामरिया में प्रेरितों ने सुसमाचार सुनाया था? नहीं, वे यरूशलेम में ही थे। यहूदिया और सामरिया में सुसमाचार लेकर जाने वाले लोग प्रेरित नहीं थे। वे साधारण लोग थे, प्रेरित नहीं, परन्तु मसीह के साधारण अनुयायी थे, और वे सब वचन का प्रचार कर रहे थे। वे तितर–बितर हुए और वे वचन का प्रचार कर रहे थे। वहाँ प्रयुक्त शब्द का अर्थ है, "वे सुसमाचार प्रचार कर रहे थे; वे लोगों को खुशखबरी सुना रहे थे।"

देखें, उन्होंने क्या किया। प्रेरितों के काम 11:19 पर आएँ। ये अज्ञात लोग जो तितर–बितर हुए थे, वे प्रेरित नहीं थे, परन्तु मसीह के साधारण अनुयायी थे। प्रेरितों के काम 11:19 को देखें। *"सो जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तितर–बितर हो गए थे, वे फिरते–फिरते फीनीके और कुप्रुस और अन्ताकिया में पहुँचे; परन्तु यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे। परन्तु उनमें से कितने कुप्रुसी और कुरेनी थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु के सुसमाचार की बातें सुनाने लगे। प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे।"*

सुसमाचार का प्रसार हो रहा है और लोग मसीह में आ रहे हैं, परन्तु प्रेरितों के कारण नहीं, उन लोगों के कारण जो तितर–बितर हुए थे, और वे प्रचार कर रहे हैं। वे सब प्रचार कर रहे हैं। यही अन्ताकिया की कलीसिया का आरम्भ है। अन्ताकिया की कलीसिया की स्थापना किसने की? पतरस ने? पौलुस ने? याकूब ने? नहीं, मसीह के साधारण अनुयायियों ने, जो हर जगह वचन का प्रचार करते और सुसमाचार सुनाते हुए

फिरे, और अन्ताकिया की कलीसिया की स्थापना हुई। यह जातियों के लिए सेवकाई का मिशन केन्द्र था जिसकी स्थापना अज्ञात मसीहियों के एक झुण्ड के द्वारा की गई थी। वे औसत, साधारण मसीही थे।

मैं आपको एक और जगह, प्रेरितों के काम 19 दिखाना चाहता हूँ। आपको याद होगा, प्रेरितों के काम 19:10, जब पौलुस इफिसुस में था और पौलुस दो वर्ष तक इफिसुस में रहकर प्रचार करता है। वह इफिसुस में रह रहा है। वह घूम नहीं रहा है। तुरन्नुस की पाठशाला में, वह प्रचार कर रहा है, परन्तु पद 10 को सुनें। लिखा है, *"दो वर्ष तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहने वाले क्या यहूदी, क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया।"* आसिया के रहने वाले सब लोगों ने प्रभु का वचन सुन लिया। क्या पौलुस पूरे आसिया में गया था? नहीं। पौलुस पूरे समय इफिसुस में रहकर वचन का प्रचार करता रहा, और हुआ यह कि लोगों ने वचन सुना और फिर वे पूरे आसिया में गए। आसिया के रहने वाले सब लोगों ने पौलुस के कारण नहीं, परन्तु लोगों के कारण प्रभु का वचन सुना था। वे सब बाहर जा रहे थे। इसी तरह आसिया के रहने वाले सब लोगों ने प्रभु के वचन को सुना, सुसमाचार को सुना, क्योंकि लोग आसिया में हर कहीं जा रहे थे।

यह केवल प्रेरितों के काम की पुस्तक में ही नहीं है। आप मसीही इतिहास में देखें, और उन समयों को देखें जब सुसमाचार का प्रसार हुआ है; कलीसियाओं का मिशन जंगल की आग के समान फैला है। पिछले सप्ताह जब मैं भारत में था तो मैं इसे पढ़ रहा था। मैं अठारहवीं सदी के मोरेवियनों, विश्वासियों के एक छोटे समूह के बारे में एक बार फिर से पढ़ रहा था। उनका नारा था, "प्रत्येक मसीही एक मिशनरी है।" उनका यही विश्वास था, और यह उनके अस्तित्व का केन्द्र था। यह उनका प्रमुख बोध था। इसका मतलब यह नहीं था कि प्रत्येक विश्वासी सुसमाचार को लेकर दूसरे देशों में जाता था, परन्तु उनके अनुसार इसका मतलब था, "जहाँ भी हम कार्य करते हैं और जहाँ भी हम रहते हैं, वहाँ हम सुसमाचार को सुनाने और सुसमाचार को फैलाने के लिए हैं। इसीलिए हमारे पास नौकरियाँ हैं; इसीलिए समाज में हमारे पास स्थान है; इसीलिए हम व्यवसायी हैं या कुछ और हैं। यह सुसमाचार के प्रसार के लिए है।"

फिर, जब उन्हें यह महसूस होने लगा कि सुसमाचार को दूसरी जगहों पर सुनाने की आवश्यकता है, उनके पास मिशनरियों को भेजने के लिए संसाधन और धन नहीं था जैसे हम आज सोचते हैं, इसलिए उन्होंने व्यवसायियों और दूसरे लोगों को भेजा जो वहाँ नौकरी करते थे और सुसमाचार सुनाते थे, उनका कहना था, "हम यही नौकरी इस देश में कर सकते हैं और इस देश में कर सकते हैं।" अतः, वे जाते और वहाँ अपनी नौकरी करते और सुसमाचार सुनाते; वहाँ रहते समय वे सुसमाचार सुनाते। वे खुशखबरी को बाँटते।

एक इतिहासकार ने कहा, "मोरवियनों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान उनके द्वारा इस बात पर बल देना था कि प्रत्येक मसीही एक मिशनरी है और उसे अपने दैनिक कार्य के माध्यम से गवाही देनी चाहिए। इससे, वे सम्पूर्ण मसीही इतिहास में सर्वाधिक असाधारण मिशनरी कलीसियाओं में से एक बन गए।" उन्होंने केवल यह विश्वास किया कि प्रत्येक चेला एक चेला बनाने वाला था। यही रहस्य है। यही मुख्य बात है। यह प्रेरितों के काम में सुसमाचार का प्रसार है, मोरेवियनों के द्वारा सुसमाचार का प्रसार, और मुझे पूरा विश्वास है कि यदि हमारे शहर में लोग अपने आप को कलीसिया में दर्शक मानना छोड़ दें तो ऐसा ही होगा। हम सब चेले बनाने वाले हैं। हमारा जीना, कार्य करना, और साँस लेना, सब कुछ लोगों को राज्य में लाने के लिए है; इस पृथ्वी पर हमारे जीवन का यही उद्देश्य है, और जब हमें यह अहसास हो जाता है, तो फिर इसकी कोई सीमा नहीं रहती कि हम पृथ्वी की छोर तक सुसमाचार के प्रसार का हिस्सा कैसे बन सकते हैं।

चार अवयव ...

अतः, प्रेरितों के काम का अध्ययन करने का कारण यह है। मैं इसे प्रेरितों के काम में और अब देखना चाहता हूँ। अब जबकि हम प्रेरितों के काम के 28 अध्यायों को पढ़ चुके हैं तो मैं चाहता हूँ कि अगले कुछ सप्ताहों में हम पीछे मुड़कर देखें, और जिस चेले बनाने के कार्य को हमने होते हुए देखा है, उसके बारे में सोचें। मैं चाहता हूँ कि हम चेले बनाने के चार अवयवों का अध्ययन करें। इसीलिए हमने 2007 में वह श्रंखला की थी। हमने सीधे महान आज्ञा से चेले बनाने के चार अवयवों की पहचान की जिसे हम यीशु के जीवन में देखते हैं, जिसे करने की वह हमें आज्ञा देते हैं, और मैं चाहता हूँ कि अगले चार सप्ताहों तक हम इसके बारे में सोचें कि यह प्रेरितों के काम की पुस्तक में कैसे होता है।

जानाः हम वचन को बाँटते हैं।
पहला अवयव है, जाना। यह जाना और चेले बनाना है। यीशु ने कहा हम वचन बाँटें। चेले बनाने में लोगों का यीशु से परिचय करवाना शामिल है। यह चेले बनाने और लोगों को मसीह के विश्वास में लाने का मूलभूत भाग है। यदि हम मसीह पर विश्वास करने में लोगों की अगुवाई नहीं करते हैं तो हम चेले नहीं बना रहे हैं। अतः, यह शुरूआत है, न कि अन्त। हम वचन को बाँटते हैं।

बपतिस्मा देनाः हम वचन को दिखाते हैं।
फिर, बपतिस्मा देने मेंः हम वचन को दिखाते हैं। *"उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"* मत्ती 28:19. हम मसीह के जीवन और कलीसिया में मसीह और उसकी देह के साथ पहचान को दिखाते हैं।

सिखानाः हम वचन सिखाते हैं।
तीसरा, हम वचन सिखाते हैं। *"उन्हें वह सब मानना सिखाओ जिसकी मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है।"* चेले बनाने में स्पष्टतः लोगों को मसीह की आज्ञा मानना और उसके पीछे चलने की शिक्षा देना शामिल है। अब, मैं चाहता हूँ आप इसे इसकी सम्पूर्णता में देखें। आप लोगों को मसीह में लाते हैं, उन्हें मसीह और उसकी कलीसिया के साथ जुड़ते हुए देखते हैं, और फिर उन्हें मसीह की आज्ञा मानना सिखाते हैं। मसीह ने हमें क्या करने की आज्ञा दी है? उसने हमें चेले बनाने की आज्ञा दी है। अतः, उन्हें चेले बनाना सिखाओ, ताकि वे चेले बनाने वाले चेले बनें, जब तक पृथ्वी पर हर व्यक्ति को पता न चल जाए कि यह परमेश्वर महिमामय है।

सारी जातियों मेंः हम संसार की सेवा करते हैं।
अन्ततः, सारी जातियों मेंः हम संसार की सेवा करते हैं। हम तब तक नहीं रूकेंगे जब तक सुसमाचार पृथ्वी की प्रत्येक जाति तक न पहुँच जाए।

यह सीधे मत्ती 28 से हैः जाना, बपतिस्मा देना, और वचन को बाँटने, वचन को दिखाने, वचन सिखाने और संसार की सेवा करने के द्वारा सारी जातियों को सिखाना। हम सब यही करते हैंः हम सब वचन को बाँटते हैं, हम सब वचन को दिखाते हैं, हम सब वचन सिखाते हैं और हम सब संसार की सेवा करते हैं। अतः, मेरी आशा है कि अगले चार सप्ताहों के बाद, यदि आप हमसे पूछते हैं कि, "चेले बनाने का क्या मतलब है," तो न केवल हम बताएँगे कि, "हाँ, इसका मतलब यह है।" स्पष्टतः, हम जानते हैं कि इसका मतलब क्या है, परन्तु यह भी कि हमारे जीवनों पर इसका क्या असर होगा। इसी प्रकार हम इसे हमारे जीवनों में लागू करते हैं। जब ऐसा होता है, तो परमेश्वर के अनुग्रह और हमारे अन्दर वास करने वाले परमेश्वर के आत्मा के द्वारा, कलीसिया के माध्यम से होने वाले सुसमाचार के प्रसार को रोका नहीं जा सकता।

अतः, हम उससे कुछ अलग करने जा रहे हैं जो हम सामान्यतः करते हैं। हर सप्ताह एक वचन लेने की बजाय, आने वाले इन चार सप्ताहों में, हम पूरी पुस्तक को देखेंगे कि वे इसमें वचन को कैसे बाँटते हैं, वचन को कैसे दिखाते हैं, वचन को कैसे सिखाते हैं, और इसका हमारे जीवनों के लिए क्या मतलब है। वे

संसार की सेवा कैसे कर रहे थे? यह सब हमें अन्तिम सप्ताह की ओर ले जाएगा, जहाँ हम देखेंगे कि उन्होंने सुसमाचार को पृथ्वी की छोर तक कैसे पहुँचाया। फिर, हम विचार करेंगे कि विश्वास के परिवार में रूप में इसका हम पर क्या असर होगा।

हम वचन को बाँटते हैं

हम वचन बाँटने को देखने जा रहे हैं। हमें देखना है कि चेले बनाने की शुरूआत यहीं से, सुसमाचार को दूसरों के साथ बाँटने से होती है। हम अपने आप से सुसमाचार का प्रचार करते हैं और वह दूसरों को सुसमाचार सुनाते समय बहता है। अतः, हम केवल अपने आप से ही सुसमाचार का प्रचार नहीं करते हैं, परन्तु दूसरों को भी सुसमाचार सुनाते हैं। यह कैसा दिखाई देता है?

वचन को बाँटना एक ऐसा क्षेत्र है जिसके बारे में हमारे विश्वास के परिवार के संबंध में सोचने पर मेरा दिल सबसे अधिक बोझिल होता है। मेरे विचार से ऐसा बहुत कुछ है जिसे परमेश्वर के अनुग्रह से हम अच्छी तरह से कर रहे हैं, और कुछ बातें ऐसी हैं जिन पर हमें कार्य करने की आवश्यकता है और हम कार्य कर रहे हैं। एक क्षेत्र जिसमें मुझे लगता है कि हम सबसे कमजोर हैं, वह है अपने पास बैठे हुए लोगों के साथ सुसमाचार को बाँटना। जब हम संसार भर में कार्य कर रहे हैं, और चेले बनाने से संबंधित दूसरे कार्यों को कर रहे हैं जिनके बारे में हम बात करेंगे, तो मेरे विचार से एक क्षेत्र जिसमें हम जूझते हैं और जिसमें मैं व्यक्तिगत रूप से जूझता हूँ, वह है, उन लोगों के साथ सुसमाचार को बाँटना जो मसीह को नहीं जानते हैं। यदि हम यह नहीं कर रहे हैं, हम पूरे दिन इसके बारे में बात कर सकते हैं, चेले बनाने के बारे में और इसे या उसे करने के बारे में, परन्तु यदि हम यह कार्य नहीं कर रहे हैं, तो हम पूरे बिन्दू से चूक रहे हैं। अतः, मैं चाहता हूँ हम एक साथ मिलकर यह सोचें कि वचन को बाँटने का क्या अर्थ है। ये झकझोर देने वाली बातें नहीं हैं जिनके बारे में हम बात करने जा रहे हैं, परन्तु कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं।

आप जानते हैं, यह प्रमुख है। कुछ लोगों का मानना है कि सुसमाचार सुनाने से पहले आपको गहन प्रशिक्षण प्राप्त करने की जरूरत होती है। सुसमाचार को सुनाने में समर्थ होने के लिए आपको सुसमाचार में और सुसमाचार के बारे में गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को करने की जरूरत है। परन्तु, यह सच नहीं है। दूसरों को मसीह के बारे में बताने के लिए आपको किसी तरह के प्रशिक्षण की जरूरत नहीं है।

उदाहरण के लिए दादा–दादी को लें। कौन ऐसे दादा–दादी को जानता है जिन्होंने अपने नाती–पोतों के बारे में बात करने के लिए प्रशिक्षण लिया हो? उन्हें अपने नाती–पोतों के बारे में बात करना अच्छा लगता है। क्योंकि जो आपके मन में है वही आपके मुँह से निकलता है; मन में जो भरा होता है, वही मुँह से निकलता है। नाती–पोते उनके दिलों में हैं, मनों में हैं, और वही निरन्तर बाहर निकलता है।

इसलिए, मेरी प्रार्थना है कि मसीह हमारे लिए इतना घनिष्ट और प्रिय हो और हमारे मनों के केन्द्र में हो कि हम अपने मुँह से मसीह की बात किए बिना कोई बातचीत न कर सकें। यहाँ का लक्ष्य यही है। सुसमाचार प्रचार कोई कार्यक्रम, कानून या नियम नहीं है; सुसमाचार प्रचार दैनिक आधार पर एक बातचीत है जिसमें मसीह हमारे दिलों से होते हुए मुँह के द्वारा प्रवाहित होता है।

यही पंजा की खूबसूरती है। पंजा एक महिला है जिससे मैं हाल ही में भारत में मिला था। पंजा और उसके पति को बड़े दिन के अवसर पर एक घरेलू कलीसिया की आराधना सभा में आने का निमंत्रण दिया गया, और वे आए और कुछ सप्ताह तक वापस नहीं आए, फिर एक दिन वापस आए। एक सुबह, पंजा और उसके पति आराधना सभा में आए। वे आराधना में बैठे और अन्त में, कलीसिया के सदस्यों ने चार घण्टे

इस विचार–विमर्श के लिए अलग किए थे कि वे अपने समुदाय में सर्वोत्तम रीति से सुसमाचार को कैसे फैला सकते हैं, और उसके लिए रणनीति क्या हो सकती है। वे पूछ रहे हैं, "सुसमाचार को फैलाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?"

पासबान पंजा के पास जाकर कहते हैं, "तुम जानती हो कि हम कुछ समय तक यहीं पर रूकना चाहते हैं और शायद तुम्हारी उसमें कोई रूचि नहीं है।" पंजा एक विश्वासिनी भी नहीं थी। पंजा ने कहा, "कोई बात नहीं, मैं रूककर सुनना चाहूँगी।" अतः, पंजा वहाँ बैठकर सुनती है। अब, जब वे अपने समुदाय में सुसमाचार का प्रचार करने के बारे में बात कर रहे थे, तो स्पष्ट है कि उन्होंने कहा, "हमें सुसमाचार को जानने की जरूरत है।" जब वे सुसमाचार के बारे में बात कर रहे थे, तो पंजा उनकी बातों को सुन रही थी, और उसने उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास करने का निर्णय लिया। इस रणनीति सत्र में वह उद्धार पाती है। वह मसीह में आती है।

उद्धार पाने के बाद, अब पंजा को पता है कि उसे वह कार्य करना है जिसके बारे में वे उन चार घण्टों के दौरान बात कर रहे थे, और इसलिए, वह अपने घर जाती है और अपने 24 मित्रों और पारिवारिक सदस्यों को अपने घर में एकत्रित करती है, और उन सबको सुसमाचार सुनाती है। उसके मित्रों और परिवार में से सात लोग मसीह को ग्रहण करते हैं। ध्यान रखें, यह केवल एक सप्ताह बाद होता है। उसके मित्रों और परिवार में से सात लोग मसीह को ग्रहण करते हैं, अब भी वह एक नई विश्वासिनी है, और अगले सप्ताह विश्वासियों का एक नया समूह उसके घर पर एकत्रित होने लगता है। यह अद्‌भुत है! दो सप्ताह के अन्दर ही मसीह में आना और एक कलीसिया की स्थापना करना। क्या आप किसी ऐसे कार्य का हिस्सा बन सकते हैं? क्यों नहीं? पंजा में भी वही आत्मा है, और सुसमाचार भी वही है। वह हमसे आगे नहीं है। वह केवल सुसमाचार जानती थी। लोगों को मसीह में लाने और दो सप्ताह के समय में एक कलीसिया की स्थापना करने के लिए केवल उसी की जरूरत पड़ी।

जब कलीसिया में हर जगह ऐसा होने लगे तो क्या होगा? प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम यही देख रहे हैं। यह एक ऐसे ही सन्दर्भ में हो रहा है। हे परमेश्वर, यह हमारे सन्दर्भ में भी हो। अतः, हम वचन को बाँटते हैं। हमें केवल सुसमाचार की जरूरत है।

हम मसीह के सुसमाचार को स्वीकार करते हैं।

चार आसान आधारभूत बातें हैं जो चेले बनाने के इस मूलभूत भाग, वचन को बाँटने में हमारी सहायता करती हैं। हम मसीह के सुसमाचार को स्वीकार करते हैं। सुसमाचार को बाँटने के लिए, पहले हमारे पास सुसमाचार होना चाहिए। हम सुसमाचार पर विश्वास करते और उसे गले लगाते हैं, जो जरूरी है।

जब आप प्रेरितों के काम की पुस्तक को देखते हैं तो इस पुस्तक चौथाई भाग सुसमाचार को समझाने वाले प्रेरितों और दूसरे लोगों के सन्देशों और प्रचारों से भरा है, और आप उन सन्देशों और प्रचारों का सर्वेक्षण करें, आप बार–बार एक अनिवार्य सुसमाचार को और उस सुसमाचार के पाँच अभिन्न अवयवों या तत्वों को सामने आते हुए देखते हैं। हम इसके बारे में पहले बात कर चुके हैं परन्तु इसे आप प्रेरितों के काम में देखते हैं। पहला अवयव है, परमेश्वर का चरित्र। आप प्रेरितों के काम 2 में पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के प्रचार को देखें। प्रेरितों के काम 13 में अन्ताकिया के पिसिदिया में पौलुस के प्रचार को देखें। वे परमेश्वर के स्वाभाव वाले, परमेश्वर–केन्द्रित सन्देश हैं। सुसमाचार परमेश्वर से, परमेश्वर के चरित्र से, परमेश्वर की करूणा से, परमेश्वर के न्याय से, परमेश्वर की पवित्रता से, परमेश्वर के कार्य से, और परमेश्वर की पहल से शुरू होता है। स्पष्ट है कि वचन को बाँटने के लिए, सुसमाचार को बाँटने के लिए, हमें बताना होगा कि परमेश्वर कौन है। यदि हम यहाँ गलती करते हैं तो हम सुसमाचार से चूक जाएँगे। अतः, पहला है, परमेश्वर का चरित्र।

फिर, अगला अवयव है, मनुष्य का पाप। पुनः, आप प्रेरितों के काम 2 में पतरस को देखें। वह कहता है, "तुमने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया। तुमने परमेश्वर के पुत्र को मार डाला।" प्रेरितों के काम 7 में, स्तिफनुस लोगों की ओर देखकर कहता है, "तुम हठीले लोग हो।" प्रेरितों के काम 17 में पौलुस को देखें। वह कहता है, "तुम इन सारे देवताओं की पूजा करने वाले, मूर्तिपूजक हो।" वह मनुष्य के पाप के बारे में बता रहा है जो मुख्य है। कोई व्यक्ति उद्धार के बारे में आपकी बात को कैसे सुनेगा, जब तक उसे उद्धार पाने की आवश्यकता के बारे में पता न हो?

फ्राँसिस शेफर से एक बार पूछा गया, "यदि आप रेलगाड़ी में एक व्यक्ति से मिलते हैं और आपके पास उससे सुसमाचार के बारे में बात करने के लिए एक घण्टा है, तो आप क्या करेंगे?" शेफर का उत्तर इस प्रकार था। शेफर ने कहा, यदि मेरे पास सुसमाचार सुनाने के लिए एक घण्टा होता तो,

> मैं 45 से 50 मिनट नकारात्मक पक्ष के बारे में बात करता, उसे दुविधा के बारे में बताता, यह बताता कि वह मरा हुआ है, फिर मैं 10 से 15 मिनट लेकर उसे सुसमाचार सुनाता। मेरा मानना है कि आज का हमारा अधिकाँश सुसमाचार प्रचार का कार्य केवल इसलिए स्पष्ट नहीं है क्योंकि हम उत्तर पर पहुँचने के लिए अत्यधिक चिन्तित रहते हैं और व्यक्ति को पहले अपनी बीमारी के वास्तविक कारण का अहसास ही नहीं होता है, जो वास्तव में नैतिक ग्लानि है, न कि परमेश्वर की उपस्थिति में कोई मनोवैज्ञानिक ग्लानि की भावना।

हम प्रेरितों के काम में मनुष्य के पाप को देखते हैं।

फिर, निःसन्देह, मसीह की पर्याप्तता। प्रेरितों के काम में प्रचार किए गए सुसमाचार का सार प्रेरितों के काम 2:36 है, जब पतरस कहता है, "परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाकर मार दिया था, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।" प्रेरितों के काम 4:12 कहता है, "और किसी में उद्धार नहीं, स्वर्ग के नीचे मनुष्यों के बीच में और कोई नाम नहीं है जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" यह मसीह का नाम है। वह क्रूस पर मरा मसीह है। जब प्रेरितों के काम की पुस्तक कहती है कि वह मसीह है, तो यह इस तथ्य की ओर संकेत है कि वही आने वाला मसीह है जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, जो मनुष्यों के पापों के लिए क्रूस पर मरा। परन्तु, वह केवल क्रूस पर मरा ही नहीं, बल्कि वह जी उठा हुआ मुक्तिदाता है।

आप 1 कुरिन्थियों 15 पर आएँ, और पौलुस सुसमाचार को याद करता है। "यही सुसमाचार मुझे मिला है कि मसीह पापों के लिए मरा, गाड़ा गया और तीसरे दिन जी उठा।" प्रेरितों के काम 3:15 कहता है, "यीशु जीवन का कर्ता जिसे परमेश्वर ने मुर्दों में से जिला उठाया।" जिस सुसमाचार को हम बाँटते हैं और जिसका हम प्रचार करते हैं, वह यह है कि यीशु हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा, वह मृतकों में से जी उठा, और वह राज्य करने वाला प्रभु है। वह प्रभु है। सम्पूर्ण प्रेरितों के काम की पुस्तक में यीशु को सर्वोच्च प्रभु कहा गया है जो ऊँचे पर राज्य करता है। वह सारे मनुष्यों का न्यायी है। प्रेरितों के काम 10:42 और प्रेरितों के काम 17:24 कहता है, "वह स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है।" इसी यीशु का हम प्रचार करते हैं।

जब हम सुसमाचार सुनाते हैं, तो हम परमेश्वर के चरित्र के बारे में बताते हैं, मनुष्य के पाप के बारे में बताते हैं और यह कि मसीह कौन है, मसीह ने क्या किया है, और विश्वास की अनिवार्यता। यहॅ एक सवाल उठाता हैः पिन्तेकुस्त के दिन उन्होंने क्या पूछा था? "हम क्या करें, पतरस?" पतरस कहता है, "तुमने परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर मार डाला।" वे पूछते हैं, "हम क्या करें?" पतरस उत्तर देता है और वह यह नहीं कहता है, "मसीह को अपने जीवन में निमंत्रण दो या मसीह को अपने मन में स्वीकार करो।" वह यह नहीं कहता है, "अपने सिरों को झुकाओ, आँखों को बन्द करो और अपने हाथों को ऊपर उठाओ।" वह कहता है, "मन फिराओ।"

आप शेष प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखें, और आप देखेंगे कि जब सुसमाचार का प्रत्युत्तर देने की बात आती है तो हमेशा ये दो शब्द सामने आते हैंः मन फिराओ और विश्वास करो। मन फिराने का मतलब है, पाप से फिरना। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम पाँच बार "मन फिराओ" को देखते हैं, और इस प्रकार वे सुसमाचार को ग्रहण करते हैं। फिर हम "विश्वास करो" को देखते हैं; इसका मतलब है, मसीह पर भरोसा रखना। प्रेरितों के काम 16:31 में, फिलिप्पी दारोगा पूछता है, "उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?" पौलुस कहता है, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू उद्धार पाएगा।"

प्रेरितों के काम 20:21 और प्रेरितों के काम 26:20 में मन फिराव और विश्वास दोनों का एक साथ वर्णन किया गया है। यह इस सुसमाचार का उचित धर्मशास्त्रीय प्रत्युत्तर हैः मन फिराओ और विश्वास करो, पाप से फिरो और मसीह पर भरोसा रखो। अतः, जब आप और मैं सुसमाचार सुनाते हैं तो हम केवल जानकारी नहीं देते हैं, बल्कि हम एक निमंत्रण देते हैं। हम लोगों को आमंत्रित करते हैं और लोगों से विनती करते हैं और लोगों को प्रोत्साहित करते हैं, "क्या तुम पाप से फिरोगे? क्या तुम प्रभु और मुक्तिदाता के रूप में मसीह पर भरोसा रखोगे?" प्रत्येक व्यक्ति का अनन्तकाल उसके प्रत्युत्तर पर निर्भर है।

यह हमें अन्तिम अवयव की ओर लाता हैः अनन्तकाल की अनिवार्यता। प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रचारक लोगों को विनाश से बचने, दुष्ट और विद्रोही पीढ़ी से दूर होने के लिए बुला रहे हैं। भाइयो और बहनो, हम सुसमाचार इसलिए सुनाते हैं क्योंकि लोगों का अनन्तकाल उसे सुनने और उसका प्रत्युत्तर देने पर निर्भर है। हम इससे अधिक महत्वपूर्ण और कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए, एक पल के लिए रूकें। उस सुसमाचार को देखें, उस सन्देश को, जिसका पहली सदी में प्रचार किया जा रहा है, और इस सन्देश के बारे में सोचें। चेले पहली सदी में यह कहते हुए घूम रहे हैं, "जिस अपराधी को क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह अनन्त परमेश्वर और मुक्तिदाता और तुम्हारे जीवन का न्यायी है।"

एक विद्वान इतिहासकार ने कहा, "शिक्षित और सभ्य लोग उस सन्देश से घृणा करने के अलावा और क्या कर सकते थे," और यह सत्य है; बहुत से लोगों ने ऐसा प्रत्युत्तर दिया। इसे लिख लेंः जब आप इस सुसमाचार को सुनाते हैं तो बहुत से लोग आपको ऐसा प्रत्युत्तर देंगे, उस सन्देश का तिरस्कार करेंगे। जब आप कहेंगे कि 2,000 साल पहले एक व्यक्ति आया, देहधारी परमेश्वर, जो तुम्हारे पापों के लिए क्रूस पर मरा, मुर्दों में से जी उठा, स्वर्ग में चढ़ा, और एक दिन वह तुम्हारा न्याय करेगा, इसलिए तुम अपने पापों से मन फिराओ और उस पर भरोसा करो और अपना जीवन उसे समर्पित करो।

बहुत से लोग इसे सुनकर, उपहास करेंगे, और यहीं पर बहुत से मसीही कहते हैं, "ठीक है, तो मैं इस सन्देश को लोगों के लिए अधिक स्वीकार्य कैसे बना सकता हूँ? मैं इसमें क्या बदलाव लाऊँ कि अधिक लोग उसे ग्रहण करें?" भाइयो और बहनो, हमें इस सन्देश में बदलाव लाने की जरूरत नहीं है। 2,000 सालों से यह सुसमाचार उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ रहा है। यही सुसमाचार आपके उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ था। परमेश्वर की स्तुति हो कि किसी ने इसे आपके लिए अधिक स्वीकार्य नहीं बनाया। उन्होंने वास्तविक क्रोध से वास्तविक मुक्तिदाता के वास्तविक सुसमाचार और वास्तविक उद्धार पर विश्वास किया। इसलिए, इस सुसमाचार को बाँटे और इस सुसमाचार की घोषणा करें और देखें क्या होता है। पंजा की कहानी में, उसके पास सुसमाचार था, उसने सुसमाचार सुनाया और सात लोगों ने प्रत्युत्तर दिया और मसीह पर विश्वास किया।

हमारे अन्दर मसीह का आत्मा है।

यह हमें दूसरे भाग पर लाता हैः हमारे अन्दर मसीह का आत्मा है। प्रेरितों के काम की पुस्तक यही बताती है। कुछ लोगों ने इसे पवित्र आत्मा के कार्य कहा है। इस पुस्तक में 50 बार पवित्र आत्मा का वर्णन किया गया है। यह बाइबल की किसी भी पुस्तक से अधिक है। इसमें में लोग पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं, वे आत्मा से परिपूर्ण हो रहे हैं, वे पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थ पा रहे हैं, और वे पवित्र आत्मा के वरदानों को पा

रहे हैं। आत्मा उन्हें सेवकाई के लिए तैयार कर रहा है। आत्मा सुसमाचार का प्रसार कर रहा है। अब, इसका मतलब यह नहीं है कि हम चुपचाप बैठ जाएँ और कुछ न करें।

सुसमाचार प्रचार में हमारी जिम्मेदारीः हम अपने मुँह से बोलते हैं। इस पूरी पुस्तक में, लोग भीड़ से और व्यक्तियों से बात कर रहे हैं। किसी के कुछ बोले बिना सुसमाचार का प्रसार नहीं होता है। वचन को बाँटने के लिए, हमें वचन बोलना होगा। चेला बनाना, शुरूआत में एक बोलने का कार्य है। हम अपने मुँह से सुसमाचार सुनाते हैं, और खूबसूरती है परमेश्वर की सर्वोच्चता और सुसमाचार प्रचारः वह उनके मनों को खोलता है। हम इस सुसमाचार को सुनाते हैं और अलौकिक सामर्थ कार्य करती है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में कुछ भी स्वाभाविक नहीं है; सब कुछ अलौकिक है।

इस सुसमाचार को सुनाएँ। प्रेरितों के काम 16:14; पौलुस नदी किनारे बात कर रहा है, और जब वह सुसमाचार सुना रहा था तो प्रभु ने लुदिया के मन को खोला। प्रेरितों के काम 13:48, "जितने अनन्त जीवन के लिए ठहराए गए थे उन्होंने विश्वास किया।" प्रेरितों के काम 2:47, "प्रभु लोगों को उनमें मिलाता रहा।" प्रभु ने मिलाया। सम्पूर्ण तस्वीर पर परमेश्वर की सर्वोच्चता है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम बिना कुछ किए चुपचाप बैठे हैं। नहीं, हम बोल रहे हैं, लेकिन हम बोल रहे हैं और आत्मा कार्य कर रहा है।

उत्तरी भारत में एक और हताश पासबान, राजेश, इसे छोड़ने के लिए, हार मानने के लिए, यह कार्य बन्द करने के लिए तैयार है, वह पासबानों के प्रशिक्षण में जाता है जिसे संभव बनाने में हमने सहायता की थी, और इस प्रशिक्षण में, वे चेले बनाने और कलीसियाओं की वृद्धि के बारे में बात कर रहे थे। इस प्रशिक्षण में प्रत्येक पासबान के लिए एक ऐसे गाँव को ढूँढ़ने की चुनौती थी, जहाँ कोई कलीसिया नहीं है, और लूका 10 के अनुसार शान्ति के योग्य व्यक्ति को खोजें। अतः, उनके लिए चुनौती यह थी कि वे एक गाँव में जाएँ और जिस पहले व्यक्ति से मिलते हैं, उससे कहें, "मैं यीशु मसीह के नाम में आया हूँ, और मैं इस समुदाय के घरों के लिए प्रार्थना करना चाहता हूँ। मैं इन घरों की ओर से एकमात्र सच्चे परमेश्वर से प्रार्थना करना चाहता हूँ।" उन्होंने राजेश और दूसरे पासबानों को यह चुनौती दी, और राजेश ने इसे स्वीकार नहीं किया। वह कहता है, "यह सफल नहीं होगा। आप किसी गाँव में ऐसे ही जाकर कार्य नहीं कर सकते हैं।" वह अपनी रस्सी के सिरे पर है और छोड़ने के लिए तैयार है, लेकिन वह कहता है, "क्यों न एक कोशिश की जाए?"

अतः, वह एक गाँव में जाता है जहाँ कोई कलीसिया नहीं थी। वह अन्दर जाता है। अपनी ओर आने वाले पहले व्यक्ति से वह मिलता है और कहता है, "मैं यीशु के नाम में यहाँ आया हूँ," इससे पहले कि वह आगे कुछ बोल पाता, वह व्यक्ति उसे रोककर कहता है, "यीशु? मैं उसके बारे में सोच रहा था।" राजेश ने कहा, "सच?" और उसने कहा, "हाँ, क्या तुम मेरे घर चलोगे?" राजेश ने कहा, "हाँ।" राजेश उस व्यक्ति के घर आता है, और उसे सुसमाचार सुनाता है। व्यक्ति स्वीकार करता है और उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास करता है और अपने मित्रों तथा परिवार को बुलाकर कहता है, "तुम्हें इसे सुनना चाहिए," और उस व्यक्ति के घर में एक कलीसिया की शुरूआत होती है। उसने केवल यीशु का नाम बताया था और परमेश्वर के आत्मा ने उनके दिलों को खोला और वहाँ एक कलीसिया शुरू हुई। राजेश ने क्या किया था? उसने केवल इतना कहा, "यीशु," और आत्मा ने कार्य किया।

राजेश के उस गाँव में जाने से पहले वहाँ कार्य करने वाला आत्मा, क्या यह वही आत्मा है जो उन लोगों में कार्य कर रहा है जिनके बीच में आप कार्य करते हैं और रहते हैं? हमें यहाँ कुछ शुरू करना होगा। परमेश्वर का आत्मा हमारे पूरे शहर में कार्य कर रहा है। हमें केवल सुसमाचार सुनाना है, केवल यीशु के बारे में बताना है और देखें क्या होता है। वही बात क्यों नहीं हो सकती? यह प्रेरितों के काम में और भारत में हुई, वही बात दोबारा क्यों नहीं हो सकती?

हम मसीह के चरित्र की झलक दिखाते हैं।
हमारे अन्दर मसीह का आत्मा है, और हम मसीह के चरित्र की झलक दिखाते हैं। हम मसीह के चरित्र की झलक दिखाते हैं। मैं प्रेरितों के काम में देखता हूँ कि वे सुसमाचार को कैसे बाँटते हैं। मैं प्रेरितों के काम 5 में रूका जब परमेश्वर ने हनन्याह और सफीरा को उनके धोखे के कारण मारा। प्रेरितों के काम 5:11 कहता है कि पूरी कलीसिया पर भय छा गया, और दो पद बाद लिखा है कि कलीसिया के बाहर भी लोगों पर भय छा गया। फिर, प्रेरितों के काम 5:14 को सुनें। लिखा है, "पहले से कहीं अधिक विश्वासी प्रभु से जुड़ते गए..." पुरूषों और स्त्रियों की भीड़ मसीह में आ रही थी, और मेरे विचार से यहाँ हम कलीसिया की पवित्रता और कलीसिया की वृद्धि के बीच प्रत्यक्ष संबंध को देखते हैं। लोगों की पवित्रता और सुसमाचार का प्रसार।

जब भी मैं विदेश, विशेषतः पूर्वी देशों में जाता हूँ, तो मुझे यह याद आता है। पिछली बार मुझे यह याद आया। पूर्व में ऐसे बहुत से लोग हैं जो मसीहियत को पश्चिमी लोगों का धर्म मानते हैं और वे पश्चिम को बेलगाम, अनैतिक जीवन से जोड़ते हैं, और इसलिए, बहुत से लोग मसीहियत को ऐसे चश्मे से देखते हैं, विशेषतः, कम से कम बाहरी रूप से कट्टर और नैतिक हिन्दुओं और मुसलमानों के स्थानों में, लोग पश्चिम की अनैतिकता को देखते हैं और कहते हैं, "यह मसीहियत है, हम इसका हिस्सा नहीं बनना चाहते हैं।"

मैं रोमियों 2 के बारे में सोचता हूँ जहाँ पौलुस कहता है, "यहूदियों के कारण अन्यजातियों के बीच में परमेश्वर की निन्दा होती है," और अपने आप को मसीही कहने वालों के कारण बहुत से देशों में मसीह की निन्दा हो रही है। यह हमसे बाहर की बात नहीं है, हमारे अन्दर यह प्रतिरोध है। अनैतिकता से भागो और पवित्रता का पीछा करो, अपने जीवन में, अपने विवाह में, अपने घर में, अपने निजी जीवन में और अपने सार्वजनिक जीवन में। अनैतिकता से भागो, पवित्रता का पीछा करो, हाँ, स्वयं के लिए। पवित्र होना अच्छा है। परमेश्वर ने शुद्धता और पवित्रता की ये आज्ञाएँ हमारी भलाई के लिए दी हैं; मसीह के समान होना अच्छा है; लेकिन केवल स्वयं के लिए ही नहीं। दूसरों की खातिर, अनैतिकता से भागो और पवित्रता का पीछा करो ताकि वे हमें देखें और जानें कि हम यीशु के साथ रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि हम इस जिम्मेदारी को महसूस करें। हमारी पवित्रता और मसीह में हमारी उन्नति का मसीह के लिए हमारी गवाही और दूसरों को मसीह में लाने की हमारी योग्यता पर प्रत्यक्ष प्रभाव होगा।

मसीह का नाम लेने वालों के रूप में, यदि हम समझौता करते हैं, यदि हम समझौता करके अनैतिकता के सामने घुटने टेक देते हैं, यदि हम अश्लीलता को देखने वाली कलीसिया हैं, यदि हम चुगली करने वाली कलीसिया हैं, और हमारे जीवन अनैतिकता से भरे हैं, तो हम उन लोगों के साथ सुसमाचार को बाँटने की हमारी योग्यता को कम कर रहे हैं, जिनका अनन्तकाल सुसमाचार को सुनने और सुसमाचार को स्पष्टता से हमारे अन्दर देखने पर निर्भर है।

अपनी खातिर और उन लोगों की खातिर कम्प्यूटर को बन्द कर दें जो आपके अन्दर सुसमाचार को देखना चाहते हैं; उन लोगों की खातिर, जिनका अनन्तकाल आपके अन्दर सुसमाचार को देखने पर निर्भर है। ताकि, जब वे आपके अन्दर इसे देखते हैं, तो वे आपकी बात को सुनेंगे। अपने विवाहों में, मसीह का पीछा करें और मसीह का आदर करें। यदि आपके विवाहों में मसीह दिखाई नहीं देता है, तो हम कौनसा सुसमाचार सुना रहे हैं? विवाह की पूरी योजना यही है, मसीह को कलीसिया में दिखाना। इसलिए, आइए हम मसीह की झलक दिखाएँ, ताकि उनको पता चले कि हम यीशु के साथ रहे हैं। वे सुनेंगे और ध्यान देंगे।

हम मसीह के राज्य का प्रसार करते हैं।
जब हम सुसमाचार को ग्रहण करते हैं, आत्मा हमारे अन्दर वास करता है, और हम मसीह के चरित्र की झलक दिखाते हैं, तो हम मसीह के राज्य का प्रसार करते हैं। यह पूरी पुस्तक इसी के बारे में है। आप

प्रेरितों के काम की पुस्तक के अन्त में देखें। प्रेरितों के काम 1:3 में यीशु राज्य के संबंध में इन बातों को बताते हैं, और फिर प्रेरितों के काम 28 बताता है कि पौलुस रोम में राज्य का प्रचार कर रहा है, और पूरी तस्वीर एक राज्य के बारे में है, जिसका विस्तार हो रहा है।

मैं चाहता हूँ हम जल्दी से मसीह के चरित्र की झलक दिखाने की ओर लौटें। मैं सावधान रहना चाहता हूँ कि आप पर बहुत अधिक बोझ न डालूँ, शुद्धता और पवित्रता के प्रोत्साहन में भी, और वास्तविकता यह है कि एक अर्थ में अनन्तकाल के लिए लोगों का जीवन सुसमाचार को देखने पर निर्भर है, परन्तु हम यह जानते हैं: मसीह ने हमारी पवित्रता की जिम्मेदारी ले ली है, और वह हमें शुद्ध बनाएगा, और वह हमें अनैतिकता से भागने में समर्थ बनाएगा। वह इसे हमारे अन्दर यथार्थ बनाएगा। इसलिए, उसमें बने रहो, उस पर भरोसा रखो, और उसे अपने अन्दर कार्य करने दो, और इस प्रक्रिया में, हमारे द्वारा सुसमाचार का प्रदर्शन हो। इसलिए, मैं उसकी ओर लौटना चाहता हूँ।

मसीह के राज्य को बढ़ाना। सुसमाचार प्रचार एक आत्मिक सेवकाई है। हम इसके बारे में बात कर चुके हैं। आत्मा की अगुवाई में आत्मा की सामर्थ पाकर, आत्मा के निर्देशन में वचन को बाँटना एक आत्मिक सेवा है जिसके भौतिक परिणाम होते हैं। इससे मेरा मतलब यह है। प्रेरितों के काम 1:15 में, कलीसिया में 120 लोग हैं। प्रेरितों के काम 2 के अन्त तक, 3,000 से अधिक लोग हो जाते हैं। "प्रभु उद्धार पाने वालों को प्रतिदिन उनमें मिला रहा था।" प्रेरितों के काम 4 में, संख्या 5,000 हो जाती है। प्रेरितों के काम 5 में, "बहुत से लोग उनमें मिल गए।" प्रेरितों के काम 6 में, "चेलों की संख्या बढ़ती गई।"

लूका द्वारा प्रयुक्त शब्दों को देखें: *"चेलों की संख्या तेजी से बढ़ती गई।"* प्रेरितों के काम 9:31, *"वह बढ़ रही थी।"* प्रेरितों के काम 11:21, *"बहुतों ने विश्वास किया।"* प्रेरितों के काम 11:24, *"बहुत से लोगों ने प्रभु पर विश्वास किया।"* प्रेरितों के काम 14:1, *"बहुत से यहूदियों और यूनानियों ने विश्वास किया।"* प्रेरितों के काम 14:21, *"मसीह में बहुत से चेले बने।"* प्रेरितों के काम 16:5 कहता है, *"कलीसिया तेजी से बढ़ी।"* प्रेरितों के काम 17, *"बड़ी संख्या में यूनानियों ने मसीह पर विश्वास किया।"* प्रेरितों के काम 19:26, *"बहुत से लोग।"*

तस्वीर यह है: लूका पूरे मार्ग में हमें भीड़ और लोगों की संख्या को दिखा रहा है। केवल गिनती के लिए संख्या नहीं; केवल रिपोर्ट के लिए संख्या नहीं, परन्तु ये उन लोगों की आत्माएँ हैं जिन्होंने सुसमाचार के प्रसार के साथ अनन्तकाल के लिए उद्धार पाया है। यह भौतिक परिणामों वाली आत्मिक सेवकाई है। भारत में पासबानों से बात करें, एक कलीसिया अब 60 अलग–अलग कलीसियाओं में बदल गई है। एक और कलीसिया बढ़कर 115 अलग–अलग कलीसियाई में बदल गई है।

यह केवल प्रेरितों के काम की पुस्तक नहीं है। हाँ, यह प्रेरितों के काम में हुआ है। बड़ी संख्या, कलीसियाओं की संख्या बढ़ रही है। यह भारत में हो रहा है। परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ के द्वारा, जब कलीसिया बढ़ती है तो सुसमाचार फैलता है; उसका प्रसार होता है।

कोलमैन ने कहा, "उद्धार के सुसमाचार को पृथ्वी छोर तक पहुँचाया जाना चाहिए। यीशु प्रभु है, वह ऊँचे पर राज्य करता है और वह अपने प्रताप और अपनी सामर्थ में वापस आ रहा है। उसके विचार से ही दिल धड़कन भूल जाता है। हम अधिक नहीं होंगे, परन्तु हमारा एक महान मुक्तिदाता है और उसका राज्य सदा का है।" अन्त में, चुनौती यह है। एक कार्य जो भारत की लगभग सारी घरेलू कलीसियाएँ, जिनके साथ हमने कार्य किया है, करती हैं, वह है, एक व्यक्ति के मसीह में आते ही, वे उन लोगों की सूची बनाते हैं जिनके बारे में उन्हें पता है कि वे मसीह को नहीं जानते हैं, और उस सूची में वे उन लोगों की पहचान करते हैं, जिन तक वे आसानी से सुसमाचार को पहुँचा सकते हैं। कुछ जगहों पर, जहाँ सताव होता है, वे ऐसे तीन या पाँच लोगों की पहचान करते हैं जिन्हें सुसमाचार सुनाने पर उनकी हत्या की सबसे कम संभावना हो।

अन्त में एक चुनौती...

समाप्त करते समय मैं चाहता हूँ कि हम तीन, चार या पाँच ऐसे व्यक्तियों के बारे में सोचें और उनके नाम लिखें जो मसीह को नहीं जानते हैं। यह जानते हुए कि सर्वोच्च परमेश्वर ने उनके साथ आपका एक संबंध ठहराया है, और उनके साथ आपके संबंध के पीछे एक कारण है। मैं चाहता हूँ आप उनके नाम लिखें और फिर, इसी समय प्रार्थना करना शुरू करें कि इस सप्ताह परमेश्वर आपको अवसर दे कि आप इनमें से कम से कम एक व्यक्ति को सुसमाचार सुना सकें।

अब, मसीह के अनुयायियों के रूप में आप इसके बारे में सोच रहे हैं। मैं जानता हूँ कि कुछ लोग मसीह के अनुयायी नहीं होंगे, और शायद आप पंजा के समान होंगे, और आप वचन को बाँटने के बारे में बात करते हुए हमें सुन रहे हैं, और आप कह रहे हैं, "मुझे सुसमाचार की जरूरत है। मुझे मेरे पापों से उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास करना है। तो मैं आपको ऐसा करने के लिए प्रोत्साहन देता हूँ और आपसे विनती करता हूँ कि आप वही करें जो पंजा ने किया था। आप में से कुछ लोग उसके लिए तैयार नहीं होंगे; आप मसीह के अनुयायी नहीं हैं, और आप उसके लिए तैयार नहीं हैं, और कुछ नामों को लिखने की बात सुनकर शायद आपकी रूचि खत्म हो सकती है।"

मैं चाहता हूँ आप इसे इस प्रकार से देखें, और मैं जानता हूँ कि शायद इस समय आप मसीह पर विश्वास नहीं करते होंगे, लेकिन एक पल के लिए मान लें कि यह सच है; एक पल के लिए मान लें कि हर एक व्यक्ति को पाप से उद्धार पाने के लिए मसीह की जरूरत है, और यदि वे मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं तो वे अनन्तकाल के लिए नरक में चले जाएँगे। इस समय शायद आप विश्वास नहीं करते होंगे, लेकिन केवल एक पल के लिए मान लें कि यह सच है। यदि यह सच है, तो क्या आप नहीं चाहेंगे कि कोई आकर आपके साथ सुसमाचार बाँटे, आपको यह खुशखबरी सुनाए कि मसीह ने आपके लिए क्या किया है?

Permissions: You are permitted and encouraged to reproduce and distribute this material provided that you do not alter it in any way, use the material in its entirety, and do not charge a fee beyond the cost of reproduction. For web posting, a link to the media on our website is preferred. Any exceptions to the above must be approved by Radical.

Please include the following statement on any distributed copy: By David Platt. © David Platt & Radical. Website: Radical.net